International Research Journal of Management Science & Technology

ISSN 2250 – 1959(0nline)
2348 – 9367 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMST.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

भाषा संबंधी समस्याओं के समाधान हेतु शिक्षा नीति 2020 द्वारा प्रदत्त सुझाव

डॉ० रिंकल शर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर,
शारदा स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंसेज
शारदा विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा

सारांश
पुष्पित तथा पल्लवित मातृभाषा किसी भी देश की भाषाई विविधता का सूचक है। भारत बहुभाषिक देश है जहां मातृभाषा के साथ-साथ अन्य भाषाओं को भी व्यवहार में लाने वाले लोग रहते हैं ।भाषा ज्ञान अर्जन, वैचारिक अभिव्यक्ति, सामाजिक व्यवहार आदि का माध्यम होती है। शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत मातृ भाषाओं के विकास हेतु कई प्रावधान प्रस्तुत किए गए हैं, जो मातृभाषा की उन्नति में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। वर्तमान समय की आवश्यकता है कि, बहुभाषिकता को बढ़ावा दिया जाए ताकि मातृभाषा पुष्पित तथा पल्लवित हो तथा भाषाओं का ज्ञान संवर्धित हो ।दशकों से जो नहीं हुआ है ,वह हमें अब करना होगा हमारे बच्चे और आने वाली पीढ़ियों के लिए भारतीय भाषाओं को पुनर्जीवित और संरक्षित रखना होगा।

शिक्षा नीति 2020 द्वारा प्रदत्त सुझाव

भाषा संबंधी समस्याओं के समाधान हेतु शिक्षा नीति 2020 द्वारा प्रदत्त सुझाव सराहना पूर्ण एवं सकारात्मक हैं। विशिष्ट रूप से मातृभाषा में शिक्षण हेतु दिए गए सुझाव उत्साहित करने वाले हैं, परंतु विचारणीय बिंदु है कि, मात्र विद्यालय शिक्षण के आधार पर सुझावों की आपूर्ति नहीं की जा सकती। विश्वविद्यालय तथा अध्यापक शिक्षण संस्थाओं की भूमिका इस दिशा में महत्वपूर्ण है ।इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु किताबों की संरचना करना भी एक महत्वपूर्ण पड़ाव सिद्ध होगा, दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह है कि वर्तमान परिदृश्य में स्कूल की पुस्तकों, सहायक पाठ्य सामग्री को पहले अंग्रेजी भाषा में तैयार किया जाता है ,तत्पश्चात तैयार सामग्री को हिंदी भाषा में अनुवादित किया जाता है। हिंदी भाषा की दिन प्रतिदिन कमजोर होती इस स्थिति हेतु यह अनुवादित शिक्षण अधिगम सामग्री उत्तरदाई है। अनुवादित शिक्षण सामग्री अंग्रेजी को ज्ञानार्जन की भाषा का स्थान प्रदान करती है तथा भारतीय भाषाओं को इसके पुनरुत्थान का माध्यम। कहने का तात्पर्य है कि, हमें उच्च शिक्षा में हिंदी माध्यम से शिक्षा अधिगम हेतु वातावरण तैयार करने हेतु प्रयासरत एवं संकल्पित होना होगा। अपनी वैज्ञानिकता के कारण भारतीय भाषाओं में विश्व का महत्वपूर्ण ज्ञान व साहित्य सृजित किया गया है, हमारे देश में अनेक भाषाएं हैं, जो विभिन्न आंचलिक क्षेत्रों और पीढ़ियों की सदियों पुरानी संस्कृति और विरासत का प्रतिनिधित्व करती हैं। इन भाषाओं का अनुप्रयोग रोजाना लाखों लोग अपने दैनिक जीवन में करते हैं ।संस्कृति और परंपराओं के संरक्षण हेतु आवश्यक है कि समस्त भारतीय भाषाओं का उपयुक्त सम्मान किया जाए ।साउथ कोरिया, जापान, जर्मनी एवं अमेरिका जैसे देशों के उदाहरण हमारे सामने हैं, जिन्होंने अपनी भाषा व साहित्य का संरक्षण किया ।भारत एक विविधता वाला देश है ,जिसकी सांस्कृतिक विरासत अत्यंत समृद्ध है परंतु मातृभाषा में निपुणता के कारण अनेक छात्र अकादमिक साहित्य व गुणवत्तापूर्ण पुस्तकों तक अपनी पहुंच नहीं बना पाते। । विविध भारतीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण साहित्य अभी भी उच्चतम स्तर तक नहीं पहुंच पाया है

।भारतीय भाषाओं की मौलिक पुस्तकों को सिर्फ कुछ ही शिक्षक और छात्र पढ़ पाते हैं, क्योंकि इनके प्रचार प्रसार का घोर अभाव है। दुख का विषय है कि हमारे अधिकांश छात्र अपनी स्थानीय भाषा में विचार अनुसंधान व्याख्या से वंचित रह जाते हैं। भाषा का विकास लगातार होता रहा है।

संप्रेषण हेतु भाषा की आवश्यकता -

प्रत्येक व्यक्ति को संप्रेषण हेतु एक भाषा की आवश्यकता होती है ।यह केवल मनुष्य के साथ ही नहीं, वरन समस्त प्राणी जगत की आवश्यकता है । समस्त प्राणी अपनी भाषा में अपने विचारों का आदान प्रदान करते हैं ।स्पष्ट है कि विचारों को व्यक्त करने अथवा उनका आदान प्रदान करने के माध्यम को भाषा कहते हैं। भाषा अथवा संप्रेषण के लिए प्रयुक्त की गई भाषा ध्वनि रहित होती है ,जिसे ब्रेल लिपि कहा जाता है और इसमें अभिव्यक्ति इशारों के माध्यम से होती है। किसी भी भाषा का स्रोत मातृभाषा होती है ।।मातृभाषा से तात्पर्य है, भाषा का उद्गम स्थल, जहां से भाषा ने जन्म लिया है, उसे उस भाषा की मातृभाषा कहते हैं ।भाषा मातृभाषा क्यों कहलाती है? बच्चा जब जन्म लेता है, तो यह प्रकृति की बहुत बड़ी देन है कि, वह पहला शब्द मां बोलता है ।प्रत्येक बच्चा मां शब्द का उच्चारण करता है। उसकी भाषा का प्रथम शब्द मां होता है। प्रकृति द्वारा प्रदत प्रक्रिया, एक स्त्री को मां जैसे शब्द का अधिकारी बनाती है ।बालक और मां के मध्य होने वाला शाब्दिक संचरण मातृभाषा को जन्म देता है। भाषा एक नैसर्गिक आवश्यकता है, इसमें संदेह नहीं है ।समूचा विश्व अपने राष्ट्रों, प्रत्येक राष्ट्र अपने राज्य, एवं प्रत्येक राज्य अनेक प्रादेशिक क्षेत्रों में बटा होता है ।प्रत्येक क्षेत्र की अपनी भाषा होती है। भारतीय संविधान में 22 भाषाओं को मान्यता दे रखी है, इसका तात्पर्य है कि भारत में मुख्यता 22 भाषाएं बोली जाती है। यह भारतीय राज्य का प्रतिनिधित्व करती हैं- उदाहरण के लिए कश्मीर में डोगरी भाषा ,पंजाब में गुरुमुखी, उत्तर प्रदेश में हिंदी, गुजरात में गुजराती, आंध्र प्रदेश में तेलुगु, चेन्नई में तमिल ,पश्चिमी बंगाल में बंगाली आदि अर्थात प्रत्येक राज्य की अपनी एक भाषा है, जो वहां के निवासियों जो वहां के निवासियों की मातृभाषा कही जाती है।यह मातृभाषा दो व्यक्तियों के मध्य संप्रेषण को सरल एवं ग्रहण करने योग्य बनाती है। मातृभाषा की उपयोगिता क्या हो सकती है, यह जानने के लिए हमें इतिहास में झांकना होगा। भारत सदैव से ही शतरंज की बिसात रहा है, जिस पर अनेक युद्ध लड़े गए ।हर बार भारत को लूटा गया तोड़ा गया ,परंतु भारत की अपनी एक मात्र भाषा है ,इसी भाषा में भारतीयों को बांधकर रखा है। मातृभाषा भारतीय संस्कृति का एक अटूट तत्व है।

जो भाषा जितनी ज्यादा इस्तेमाल होती है, उसका उतना ही विस्तार और विकास होता है। हमारे यहां अंग्रेजों के आने से पहले सरकारी, दरबारी और अदालती कामकाज फारसी और उर्दू में होता था। ब्रिटिश काल में भी भारत में अंग्रेजी के साथ-साथ उर्दू में काम होता रहा, इसका नतीजा यह हुआ कि सारी शब्दावली फारसी भाषा में और अंग्रेजी में विकसित हुई, किंतु जब स्वतंत्रता के बाद हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया और हिंदी में ही केंद्र तथा कुछ राज्यों में कामकाज होने लगा, तो हिंदी में नए-नए शब्दों का विकास होने लगा। हमने प्रारंभ में ही लोक सभा, राज्य सभा, विधान परिषद, विधान सभा, सचिवालय, मंत्रिमंडल, सरकार, आयोग, प्रशासन जैसे शब्द बना दिए और अब सभी भारतीय भाषाओं में यही शब्द पारिभाषिक शब्द बन चुके हैं। बाद में जैसे-जैसे नए विषय का कामकाज सामने आया नवीन शब्दावली और वाक्य रचना भी विकसित होने लगी। भाषा जितनी सुगठित होगी, हमारी बात का असर भी उतना ही गहरा होगा।

मातृभाषा: संज्ञानात्मक विकास, सृजन क्षमता, सांस्कृतिक विरासत ज्ञान परंपरा आदि के पोषण और प्रसार का माध्यम-

मातृ भाषाएं संज्ञानात्मक विकास, सृजन क्षमता, सांस्कृतिक विरासत ज्ञान परंपरा आदि के पोषण और प्रसार का माध्यम है। इस स्थिति के बाद भी दुनिया में बोली जाने वाली 6000 भाषाओं में से 43% खतरे में

है। यूनेस्को की एक रिपोर्ट बताती है कि हर सप्ताह कम से कम दुनिया की कोई एक भाषा लुप्त हो रही है खतरा भाषाओं के लुप्त होने का ही नहीं है, बल्कि अनेक विचारों कौशलों और चिंतन परंपराओं की समाप्ति का भी संकेत है।सवाल उठता है कि मातृ भाषाओं की महत्ता स्वीकृति के बावजूद भाषाएं खतरे में क्यों है?किस तरह मात्र भाषाएं मुक्ति की ओर बढ़ रही हैं? मातृभाषाओं के विकास संबंधी प्रयत्नों की दिशा दशा क्या है ? मातृभाषा पर मंडराता संकट गरीबी भुखमरी की तरह केवल अफ्रीकी और एशियाई देशों तक सीमित नहीं है, दुनिया का नक्शा उठाकर देखें तो हर उस भाग में भाषाओं पर संकट है ,जहां किसी एक भाषा या चुनी हुई भाषाओं का राज व्यवस्था अर्थव्यवस्था और शिक्षा व्यवस्था पर अधिकार है ।जहां सामाजिक गतिशीलता के लिए सांस्कृतिक अनुकरण अनिवार्य है। ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था में भाषाई आधार पर भेदभाव है। यह भाषा एकाधिकार या वर्चस्व, आर्थिक समानता और शोषण का माध्यम बनता है। उदाहरण के लिए अमेरिका कनाडा न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया के मूल निवासियों की भाषाएं खतरे में है और भारत में बोली जाने वाली भाषाएं विलुप्त होने की कगार पर है।भाषाई साक्षरता को समृद्ध करने वाले संसाधन जैसे-भारतीय भाषाओं की पत्र-पत्रिकाओं, बाल साहित्य आदि का क्षेत्र सिकुड़ता जा रहा है भारतीय भाषाओं में प्राथमिक शिक्षा के लिए संभावना बढ़ी हैं ,लेकिन उच्च शिक्षा में भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा की खस्ता हालत भी एक कटु सच्चाई है। भारतीय भाषाओं में शिक्षा की गुणवत्ता पूर्ण सामग्रियों और समर्थ अध्यापकों का अभाव है ।स्पष्ट है कि सकारात्मक हस्तक्षेप द्वारा मातृ भाषाओं के संरक्षण और प्रतिष्ठा के रास्ते में कई चुनौतियां हैं ।अनेक प्रमाण हैं जो भाषाई वर्चस्व के बीच संभावना को दर्शाते हैं विश्व स्तर पर गणित और विज्ञान की उपलब्धि परीक्षा में जापान, चीन, कोरिया आदि गैर अंग्रेजी भाषी देशों के विद्यार्थियों की उपलब्धियां महत्वपूर्ण होती है विश्वविद्यालयों की सूची में अनेक विश्वविद्यालय हैं, जहां अक्षर का माध्यम अंग्रेजी फ्रेंच जर्मन नहीं है। ऐसे सकारात्मक उदाहरण को सामने रखते हुए हमें अपनी मातृभाषा को अपनाना होगा ,उन्हें सूचना प्रौद्योगिकी से पैदा हुए ज्ञान प्रसार के नए क्षेत्रों में खड़ा करना होगा ।साक्षरता की सामग्रियों- जैसे पाठ्यपुस्तक विधि को रचना होगा, दूसरों की मातृ भाषाओं की सराहना करनी होगी । अन्य भाषाओं को जानकर उनमें संचित ज्ञान रखकर स्वाद चखना होगा। मातृ भाषाओं को सजावट की सामग्री बनाने के स्थान पर जीवन के स्पंदन के रूप में स्थापित करना होगा।

भाषा के सम्बंध में गांधी जी के विचार-

भाषा के सम्बंध में गांधी जी के विचार राजनीतिक अथवा भावुक न होकर अत्यन्त संतुलित तथा गंभीर हैं।यह सत्य है कि गांधी जी स्वयं अंग्रेजी के प्रभावी ज्ञाता तथा वक्ता थे। एक बार एक अंग्रेज विद्वान ने कहा था कि भारत में केवल डेढ़ व्यक्ति ही अंग्रेजी जानते हैं- एक गांधी जी और आधे मि. जिन्ना। भाषा के सन्दर्भ में गांधी जी के विचार स्पष्ट थे। वे अंग्रेजी भाषा को लादने को विद्यार्थी समाज के प्रति "कपटपूर्ण कृति" समझते थे। उनका मानना था कि भारत में 90 प्रतिशत व्यक्ति चौदह वर्ष की आयु तक ही पढ़ते हैं, अत: मातृभाषा में ही अधिक से अधिक ज्ञान होना चाहिए। उन्होंने 1909 ई. में "स्वराज्य" में अपने विचार प्रकट किए हैं। उनके अनुसार हजारों व्यक्तियों को अंग्रेजी सिखलाना उन्हें गुलाम बनाना है। गांधी जी विदेशी माध्यम के कटु विरोधी थे। उनका मानना था कि विदेशी माध्यम बच्चों पर अनावश्यक दबाव डालने, रटने और नकल करने की प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करता है तथा उनमें मौलिकता का अभाव पैदा करता है। यह देश के बच्चों को अपने ही घर में विदेशी बना देता है। उनका कथन था कि-"यदि मुझे कुछ समय के लिए निरकुंश बना दिया जाए तो मैं विदेशी माध्यम को तुरन्त बन्द कर दूंगा।" गांधी जी के अनुसार विदेशी माध्यम का रोग बिना किसी देरी के तुरन्त रोक देना चाहिए। उनका मत था कि मातृभाषा

का स्थान कोई दूसरी भाषा नहीं ले सकती। मौलिक लेखन, चिंतन या रचनात्मकता को दुनिया भर में नोट किया जाता है।

समाज की रचनात्मकता और मौलिकता के संवर्धन में भाषा का महत्व -

दुनिया में आज भी भारत की पहचान यहां की भाषा में लिखित उपनिषद, ब्रह्मसूत्र, योगसूत्र, रामायण, महाभारत, नाट्यशास्त्र आदि से है, जो मौलिक रचनाएँ हैं।समाज की रचनात्मकता और मौलिकता अनिवार्यत: उसकी अपनी भाषा से जुड़ी होती है। दुनिया में मौलिकता का महत्व है, माध्यम का नहीं। इसलिए यदि स्वतंत्र भारत में मौलिक चिन्तन, लेखन का ह्रास होता गया तो उसका कारण 'अंग्रेजी का बोझ' है। मौलिक लेखन, चिन्तन विदेशी भाषा में प्रायः असंभव है। कम से कम तब तक, जब तक ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका की मूल सभ्यता की तरह भारत सांस्कृतिक रूप से पूर्णत: नष्ट नहीं हो जाता और अंग्रेजी यहां सबकी एक मात्र भाषा नहीं बन जाती। तब तक भारतीय बुद्धिजीवी अंग्रेजी में कुछ भी क्यों न बोलते रहें, वह वैसी ही यूरोपीय जूठन की जुगाली होगी, जिसकी बाहर पूछ नहीं हो सकती। वर्चस्व की यही प्रवृत्ति शिक्षा और मीडिया के क्षेत्र में भी देख सकते हैं ।विद्यालय स्तर पर धारणा घर कर गई है कि, अंग्रेजी जैसी आर्थिक दृष्टि से लाभकारी भाषा को सीखने का सबसे बेहतर तरीका है , कि शुरुआत से ही इसी माध्यम से पढ़ाई की जाए। इस प्रवृत्ति और पूर्वाग्रह के चलते बहुभाषी समाजों ने अपनी अपनी मातृभाषा को हाशिए पर धकेल दिया ।इस प्रवृत्ति को बनाए रखने के लिए मातृ भाषाओं की चिंता का भी दुष्प्रचार किया जाता है। इसकी एक बानगी देखिए राजनीतिक आंदोलनों, चुनाव प्रचार और आम जनता से सीधे संवाद के लिए एकमात्र विकल्प मात्र भाषाएं होती हैं ।जबकि न्याय, शिक्षा ,विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में यह भाषाएं समर्थ नहीं हैं। ऐसे ही दोहरे मानदंड मातृ भाषाओं की जीवन शक्ति को कमजोर करते हैं ।वर्तमान में लगभग हर देश अपनी भाषाई विविधता के संरक्षण के लिए सार्थक प्रयास कर रहा है। वैश्विक स्तर पर सहमति बन चुकी है कि, शाश्वत विकास को बनाए रखने के लिए मातृभाषा के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा का चयन करें। इसका सकारात्मक प्रभाव भी पड़ा है, भारत के संदर्भ में देखा जाए, तो क्षेत्रीय भाषाओं में प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के अवसर बढ़े हैं। त्रिभाषा सूत्र के माध्यम से एक से अधिक भाषाओं को औपचारिक शिक्षा में स्थान दिया गया है ।भारतीय भाषाओं के माध्यम से स्नातक उत्तीर्ण व्यक्ति की संख्या बढ़ती जा रही है ,भारतीय भाषाओं के माध्यम से संचालित विद्यालयों और महाविद्यालयों की संख्या बढ़ी है ।

भारतीय भाषाओं को पुनर्जीवित और संरक्षित करने हेतु सुझाव-

इस विश्व का महत्व पूर्ण ज्ञान और साहित्य भारतीय भाषाओं में रचा गया है। यह सभी भाषाएं सच्चे अर्थों में क्रियाशील है ।लाखों लोग रोजाना अपने जीवन में इस्तेमाल करते हैं और सदियों पुरानी संस्कृति और विरासत का प्रतिनिधित्व करते हैं ।इन सभी भारतीय भाषाओं और संस्कृति का संरक्षण करना बहुत जरूरी है।शिक्षा संस्थाओं का यह उद्देश्य होना चाहिए कि वे स्कूल और उच्च शिक्षा के स्तर पर भारतीय भाषाओं में समृद्ध और बेहतरीन कार्यक्रम चलाएं। ऐसा करने के लिए विद्यालय महाविद्यालय और विश्वविद्यालय के शिक्षकों को भारतीय भाषाओं में योग्य बनाना होगा। भारतीय भाषा और उनकी साहित्यिक परंपराओं के संकाय उच्च शिक्षा संस्थान में स्थापित किए जाने चाहिए ।यह विभाग भाषा के शिक्षकों को प्रशिक्षित करेंगे, इसके बाद इन शिक्षकों को पूरे देश भर के स्कूलों में भेजा जाना चाहिए। ताकि देश के बच्चे अपनी मातृभाषा अच्छे से सीख सकें और साथ ही साथ राष्ट्रीय अखंडता और एकीकरण को भी सुनिश्चित किया जा सके। शिक्षा व्यवस्था द्वारा भारतीय भाषा और संस्कृति और परंपरा के विकास में योगदान सुनिश्चितहोगा। उच्च शिक्षा संस्थानों में स्थानीय भाषा के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं में गुणवत्ता पूर्ण विभागों की स्थापना हो ऐसे शिक्षकों की नियुक्ति हो, जो स्थानीय भाषा के अतिरिक्त कोई अन्य भाषा भाषी हो तथा भाषा मर्मज्ञ हो। भारतीय भाषाओं और संबंधित साहित्य में शोध हेतु पर्याप्त अनुदान के प्रावधान की परिकल्पना नई शिक्षा नीति करती है। पाली ,फारसी, प्राकृत भाषा हेतु राष्ट्रीय

संस्थानों की स्थापना का भी लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इन संस्थानों में तुलनात्मक साहित्य के अध्ययन हेतु वित्तीय अनुदान की व्यवस्था की परिकल्पना की गई है।दशकों से जो नहीं हुआ है ,वह हमें अब करना होगा हमारे बच्चे और आने वाली पीढ़ियों के लिए भारतीय भाषाओं को पुनर्जीवित और संरक्षित रखना होगा।

संदर्भ:

1. https://en.wikipedia.org/wiki/National_Policy_on_Education 2.
https://www.oneindia.com/india/new-education-policy-2020-advantages-and-disadvantages-of-nep-3127811.htm

2.ncert.nic.in/pdf/nep//NEP_2020.pdf

3. https://www.mehtvta.com/rashtrabhasha-hindi-ka-mahatva

4-रितिका, अप्रैल 2020, प्राथमिक शिक्षक शैक्षिक संवाद पत्रिका "बहुभाषी भारत में मातृभाषा का महत्व तथा उसकी शिक्षा में उपयोगिता" 'राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली'

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA

Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM